मुकेश बिरहोर: शिक्षा की रोशनी से बदलाव की कहानी



बिरहोर समुदाय के छोटे से गांव पिपराडीह, प्रखण्ड -सरिया, जिला-गिरीडीह में जन्मे मुकेश बिरहोर ने अपने साहस और दृढ़ संकल्प से यह साबित कर दिया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, शिक्षा की ताकत से हर अंधकार को मिटाया जा सकता है।

मुकेश का परिवार बिरहोर समुदाय के उन सैकड़ों परिवारों की तरह है, जो गरीबी और अशिक्षा से जूझ रहे हैं। उसके माता-पिता जंगल में लकड़ी और वनोपज इकठ्ठा करके अपने परिवार का गुजारा करते हैं। बिरहोर समुदाय में बाल विवाह एक आम प्रथा है, और मुकेश के माता-पिता भी उसे कम उम्र में शादी के बंधन में बांधना चाहते थे।

बाल विवाह का विरोध

जब मुकेश ने सुना कि उसके माता-पिता उसकी शादी की योजना बना रहे हैं, तो उसने इसका कड़ा विरोध किया। वह जानता था कि शादी के बाद उसकी पढ़ाई छूट जाएगी और उसका सपना टूट जाएगा। मुकेश ने अपने माता-पिता को समझाने की कोशिश की कि शिक्षा उसके जीवन को बदल सकती है और उनके परिवार की स्थिति को भी सुधार सकती है।

शिक्षा के प्रति जुनून

मुकेश बचपन से पढ़ाई में होशियार था। उसका सपना था कि वह पढ़-लिखकर अपने परिवार और अपने समुदाय की स्थिति को बेहतर बनाए। बिरहोर समुदाय में शिक्षा का महत्व कम ही समझा जाता है, लेकिन मुकेश ने अपने गांव के प्राथमिक स्कूल से पढ़ाई शुरू की और अपने कठिन परिश्रम से हर परीक्षा में अच्छे अंक हासिल किए।

मददगारों का सहयोग

जब मुकेश के विरोध के बाद भी उसके माता-पिता अपनी बात पर अड़े रहे, तो उसने गांव के स्कूल के शिक्षक और स्वयंसेवी संस्था बनवासी विकास आश्रम से मदद मांगी। बनवासी विकास आश्रम के कार्यकर्ताओं ने मुकेश के माता-पिता से बात की और उन्हें यह समझाया कि बाल विवाह से न केवल मुकेश का भविष्य खराब होगा, बल्कि यह कानून के खिलाफ भी है। संस्था के कार्यकर्ताओं ने सरकारी योजनाओं और सुविधाओं के बारे में भी जानकारी दी, जिससे मुकेश की पढ़ाई जारी रखने में मदद हो सके।

माता-पिता की सहमति

कई दिनों की बातचीत और समझाने के बाद मुकेश के माता-पिता ने उसकी शादी रोकने का फैसला किया। उन्होंने यह महसूस किया कि मुकेश की शिक्षा उनके परिवार के लिए गर्व और प्रगति का कारण बन सकती है।

आगे का सफर

आज मुकेश कक्षा 10 में पढ़ रहा है और अपने स्कूल का सबसे होनहार छात्र है। मुकेश ने अपने दोस्तों और समुदाय के अन्य बच्चों को भी शिक्षा के महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया है।

प्रेरणा की मिसाल

मुकेश की कहानी न केवल बिरहोर समुदाय के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा है। उसने साबित कर दिया कि यदि मन में दृढ़ संकल्प और शिक्षा के प्रति समर्पण हो, तो हर रुकावट को पार किया जा सकता है।

मुकेश के प्रयासों से आज उसके गांव में शिक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ी है। यह कहानी एक उदाहरण है कि बदलाव संभव है, बस उसके लिए किसी को पहला कदम बढ़ाने की जरूरत होती है। मुकेश जैसे बच्चे आने वाले समय में अपने समुदाय के लिए एक नई दिशा और नई उम्मीद लेकर आएंगे।

